MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829(Online)
International Peer Reviewed and Referred E-Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 02, Issue: 04, December 2024

हिंदी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण

डॉ.तृप्ति जे. रंगपरिया
मदद्रिश प्राध्यापक (हिन्दी)
सरकारी कला महा विध्यालय, कोटड़ा सांगानी, जि. राजकोट।

मानव जीवन एवं पर्यावरण एक दूसरे के पर्याय है। जहां मानव का अस्तित्व पर्यावरण से है वही मानव द्वारा निरंतर किए जा रहे पर्यावरण के विनाश से भविष्य के संकट भी जुड़े हैं।

पर्यावरण का संबंध समाज के प्रत्येक वास्तु जगत से है, साहित्य से भी पर्यावरण का अटूट नाता देखा गया है। साहित्य में पर्यावरण का चित्रण प्रकृति वर्णन के रूप में हुआ है। प्रकृति चित्रण साहित्य में प्रकृति को पर्यावरण का अंग मानकर पर्यावरण को ही प्रकृति के रूप में चित्रित किया गया है। साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण में अंतर नहीं किया जाना जरूरी है। प्रकृति और मनुष्य का साथ मनुष्य के इस धरती पर अस्तित्व के साथ ही जुड़ा हुआ है। मनुष्य ने अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए प्रकृति को समझने तथा उसके साथ सामंजस्य बनाने की कोशिश की। फिर भी मनुष्य प्रकृति के अनबूजे रहस्यों के आगे चमत्कृत होकर रह जाता है। प्रकृति की शक्ति के आगे मनुष्य निरूपाय है। मनुष्य प्रकृति की शक्तियों से डरकर उसे प्रसन्न करने के लिए उसकी वंदना में गीत लिखने लगा। वेदों में और कवियों की वाणी में प्रकृति और मनुष्य का सहज संबंध व्यक्त किया गया है।

हमारे प्राचीन महाकाव्य रामायण महाभारत में भी प्रकृति और मनुष्य का घनिष्ठ संबंध वर्णित हुआ है। इन्हीं महाकाव्य के कथानको को आधार बनाकर आधुनिक काल में प्रकृति का चित्रण करती हुई रचनाएं लिखी गई। प्रकृति के सौम्य और रूद्र रूप का वर्णन साहित्य की विषयवस्तु भी रहा है।

हिंदी साहित्य में आदिकालीन वीर गाथाओं की पृष्ठभूमि में प्रकृति का ही वर्णन हुआ है। यह प्रकृति का उपदेशक के रूप में चित्रण हुआ है।

आदिकालीन कवि विद्यापति की पदावली में प्रकृति वर्णन अद्वितीय है।

मौली रसाल मुकुल भेल ताब

कोकिल पंचम गाय।

भक्ति काल में भक्त कवियों ने भी बखूबी से प्रकृति वर्णन किया है। कबीर के पदों में प्रकृति उपदेशक के रूप में चित्रित है।

साहिब तेरी साहबी, सब घट रही समाय।

ज्यों मेहंदी के पात में लाली रखी न जाय।

इस तरह कबीर के पदों में तमाम पशु पक्षियों, पेड़ पौधों व जीव जंतुओं की गतिविधियों पर पैनी दृष्टि से देखा गया है।

डाली छेडू ना, पता छेडू , ना कोई जीव सताओ।

पात-पात में प्रभु बसत है, वाही को शिश नवाऊ।

भक्ति कालीन कवियों मैं जैसे तुलसी रहीम मीराबाई आदि सभी ने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए अपने साहित्य द्वारा जनसाधारण में जागरूकता फैलाई। तुलसीदास की रामचरितमानस में इस प्रकार के अनेक प्रसंग है। जहां राम गंगा आदि नदियों की पूजा करते तथा सीता वृक्षों को सींचती हुई दिखाई देती है। समुद्र द्वारा मार्ग न देने के प्रसंग में लक्ष्मण राम से समुद्र को सोख

MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829(Online)
International Peer Reviewed and Referred E-Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 02, Issue: 04, December 2024

देने के लिए कहते हैं परंतु राम उनके इस सुझाव को स्वीकार नहीं करते। ऐसा करने से समुद्र के जीव जंतु वनस्पतियां नष्ट हो जाएंगे और पर्यावरण को क्षति पहुंचेगी। इस प्रकार प्राचीन महाकाव्य में भी प्रकृति के जतन का विचार किया गया है।

रीतिकाल में बिहारी, पद्माकर, देव ,सेनापति के काव्य में प्रकृति के सौंदर्य को परखा गया है। बिहारी का दोहा,

चुवत स्वेद मकरंद कन

तरु तरु तरु वीरमाय।

आवत दक्षिण देश ते

थक्यों बटोही बाय।

आधुनिक काल में छायावादी कवि पर्यावरण के प्रति सजग दिखाई देते हैं। छायावादी काव्य में प्रकृति पारक का दृष्टिकोण को देखकर उसे प्रकृति काव्य भी कहा गया है। मैथिलीशरणगुप्त की पंचवटी कविता में प्रकृति के सौंदर्य को वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि,

चारु चंद्र की चंचल किरणें

खेल रही है जल थल में।

स्वच्छ चांदनी बिछी हुई है

अवनि और अंबर तल में।(1)

छायावादी कवियों में प्रकृति के कवि के रूप में पहचाने जाते हैं इससे सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं में प्रकृति चित्रण कूट कूट कर भरा हुआ है। धरती कितना देती है काव्य में कवि ने प्रकृतिदेवी एश्वर्यशक्ति का प्रतीक मानकर उनके गुणगान किया है।

यह धरती कितना देती है धरती माता

कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को

नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्व को।

बचपन में छी:स्वार्थ लोभ वश पैसे बोकर।(2)

पंत के काव्योमें प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन हुआ है। प्रकृति द्वारा मनुष्य को प्रदत्त मुक्त संदेश का वाहक पंत का काव्य है। छोड़ द्रुमो की मृदु छाया काव्य में कवि ने प्रकृति के आगे नारी सौंदर्य को हिन बताया है।

छोड़ द्रुमो की मृदु छाया

तोड़ प्रकृति से भी माया

वाले तेरे बाल जाल में

कैसे उलजादू लोचन।

जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी काव्य पर्यावरण चित्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर

एक बेठ शिला की शीतल छाह

एक पुरुष भीगे नयनों से

MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829(Online)
International Peer Reviewed and Referred E-Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 02, Issue: 04, December 2024

देख रहा था प्रलय प्रवाह।(3)

कामायनी काव्य में प्रसाद जी ने पर्यावरण के रूद्र स्वरूप का वर्णन किया है। पर्यावरण सृष्टि को कैसे प्रभावित करता है उसका उत्तम नमूना कामायनी काव्य है। जिसमें प्रसाद जी ने पर्यावरण में होने वाले परिवर्तन से प्रभावित सृष्टि का चित्रण किया है।

छायावादी कवियत्री महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में प्रकृति पर नारी का आरोप किया है। दीपशिखा महादेवी की अनुपम काव्य कृति है। जहां कवियत्री ने मनुष्य ही नहीं तन्वंगी पक्षियों के प्रति भी चिंता प्रकट की है।

पथ ना भूले एक पग भी

घर न खोए लघु विहग भी

स्निग्ध लो कि तूलिका से

आक सब की छाह उज्जवल।

छायावादी कवियों ने प्रकृति का मानवीकरणकर मानवीय भाव का आरोपण किया है। कामायानी में प्रसाद जी ने चिंता व्यक्त की है कि प्रकृति और मानव समाज के बीच का बढ़ता फासला असंतुलन की स्थिति पैदा करता है। मनुष्य लालच से असंतुलित होकर प्रकृति के रौद्ररूप का शिकार होता है और सब कुछ नष्ट हो जाता है। कामायानी संभवत हो पहली रचना है जहां प्रकृति और पर्यावरण को अलग करके देखा गया है और पर्यावरण के असंतुलन की समस्या पर विचार किया गया है। 1936 में कामायनी में प्रसाद जी ने प्राचीन कथा का सहारा लेकर सृष्टि के विनाश की कहानी कही।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने स्वयं को वसंत का अग्रदूत कहा है।

हिंदी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण आलंबन उद्दीपन रूप में होता रहा है। प्रकृति चित्रण और पर्यावरण चिंता में बड़ा अंतर है। पर्यावरण का संतुलन गंभीर अंतरराष्ट्रीय समस्या है। इस समस्या पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन कई बार हुए हैं। जलवायु परिवर्तन आज वैश्विक स्तर की गंभीर समस्या है। जो सारी जीव सृष्टि के लिए खतरा है।

समकालीन समय में पर्यावरण विश्व भर के लिए चिंतन का विषय है। भूमंडलीकरण के इस दौर में दुनिया में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। विदेशी कंपनियों के आने से न केवल शहर बल्कि गांव का भी रूप बदलता दिखाई दे रहा है। यह बदलाव इतना तेज और आकस्मिक है कि सामान्य आदमी इससे तालमेल नहीं बैठ पा रहा।

आधुनिक कवि अरुण कमल का काव्य संग्रह नए इलाके में उन्होंने यह चिंता व्यक्त की है,

इन नए बसे इलाकों में,

जहां रोज बन रहे हैं नए नए मकान।

मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूं

धोखा दे जाते हैं पुराने मिशन।(4)

कुंवर नारायण की कविताओं में भी प्रकृति के प्रति विशेष लगाव देखा गया है। चक्रव्यूह, परिवेश: हम तुम काव्यसंग्रह में परिवर्तित होते हुए पर्यावरण के प्रति चिंता व्यक्त की गई है।

मदन कश्यप के काव्य संग्रह "लेकिन उदास है पृथ्वी में समूची पृथ्वी की अनुगूंज कवि के हृदय में छिपी हुई है। विश्व वेदना प्रस्तुत करते हुए पूंजीवाद के वास्तविक चरित्र को उजागर करने का कवि का उद्देश्य है।

जिनकी आकांक्षाएं छेद रही है

ओजोन की रक्षा परत

पर्वतों की छतिया

MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829(Online)
International Peer Reviewed and Referred E-Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 02, Issue: 04, December 2024

जिनकी तृष्णा पी जाती है।(5)

मनुष्य और पर्यावरण के भावात्मक संबंध को समकालीन कवियों के द्वारा रेखांकित किया गया है।

नरेश मेहता ने शबरी काव्य में पंपासर सर्ग में पर्यावरण का सुंदर वर्णन किया है। काव्य में कवि ने प्रकृति के जीवो से मानव जीवन को संदेश दिया हैं।

मंगलेश डबराल की कविताओं में यहां थी वह नदी कविता में पर्यावरण के संकट को प्रकृति व मनुष्य के संकट के समतुल्य रखकर देखा गया है।

हमें याद है,

यहां थी वह नदी इसी रेत में

जहां हमारे चेहरे हिलते थे

यहां थी वह नव इंतजार करती हुई

अब वहां कुछ नहीं है।(6)

इस प्रकार कविता का सरोकार मानव तक ही सीमित नहीं है उसकी परिधि में समग्र प्रकृति समाहित है। कविता का सरोकार पर्यावरण विकृति और उसके परिणाम से भी है। वर्तमान समय में साहित्य के माध्यम से पर्यावरणीय चिंतन की नितांत आवश्यकता है।

- संदर्भ सूची

(1)मैथिली शरण गुप्त पंचवटी

(2)सुमित्रानंदन पंत धरती कितना देती है।

(3)जयशंकर प्रसाद कामायनी

(4)अरुण कमल नए इलाके में पृष्ठ १३

(5)मदन कश्यप लेकिन उदास है पृथ्वी

(6)मंगलेश डबराल यहां थी वह नदी पृष्ठ 51

Certificate No.:020412202410

MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH

(MUCOJOR)-2583-9829 (On-line)

International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding

डॉ.तृप्ति जे. रंगपरिया

In recognition of the publication of the paper entitled

हिंदी साहित्य में पर्यावरण का चित्रण

Published in Volume 02, Issue 04, December 2024.

EDITOR IN CHIEF